विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग अष्टम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-02-03 ,-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

पाठ:-नवम: पाठनाम सत्सङ्गति:

पाठ्यांश –

माता - वत्स! त्वं तु योग्य: असि।शास्त्रस्य अयमपि निर्देश: अस्ति यत्

विद्ययालङ्कृत: अपि दुर्जन: परिहर्तव्य:। उक्तं च –

दुर्जन: परिहर्तव्य:विद्ययालङ्कृतोऽपि सन् ।

मणिना भूषित: सर्प: किमसौ न भयंकर:।।

पुत्र:- अनुगृहीतोऽपि मात: ।सत्सङ्गते: महत्त्वं विज्ञाय आत्मन:कल्याणाय

च प्रयत्नेन सत्सङ्गति: एव करणीया ।

शब्दार्था:-

अयमपि – यह भी , विद्ययालङ्कृत - विद्या से विभूषित

परिहर्तव्य: - त्याग करने योग्य है , किमसौ - क्या वह भी

अनुगृहीतोतोऽस्मि - कृतज्ञ हूं , विज्ञाय - जानकर

अर्थ-

माता- पुत्र!तुम तो योग्य हो।शास्त्र का भी निर्देश है कि विद्या से

विभूषित दुष्ट भी त्याग करने योग्य है।और कहा गया है-

विद्या से आभूषित दुष्ट लोग भी त्याग करने योग्य है। मणि से

विभूषित सांप क्या भयंकर नहीं होता है।

पुत्र:- मा मैं आपका कृतज्ञ हूं।सत्संगति

के महत्त्व को जानकर अपने कल्याण के

लिए और प्रयत्न से सत्संगति ही करना चाहिए।